धरती के फूल

बाल–कविता संग्रह

–एस. के. प्रोग्रामर

अंगिका
बाल–कविताएं

धरती के फूल

ISBN : 978-93-90552-06-1

© सुधीर कुमार प्रोग्रामर

प्रथम संस्करण : 2021
विक्रमाब्द : २०७८

प्रकाशक : जिज्ञासा संसार
रामकृष्ण कॉलोनी, रोड न.–7
महेन्द्रू, पटना–800006

आवरण : निखिल चंदन, पल्लवी रानी
मुद्रक : आदित्य इन्टरप्राइजेज, पटना

मूल्य : 120/–

छात्र–छात्रा लेली
80/–

Dharti Ke Phool, Angika Bal-Poems
By : Sudhir Kumar Programmer

सहधर्मिणी

कुमारी अनिता सिन्हा

(एम. ए. अंगिका, बी.टी., सहायक शिक्षिका)

कें...

कविता क्रम		पृष्ठ संख्या
भूमिका	डॉ. शिवनारायण	
प्रकाशकीय	निवेदन	
1	विनती	09
2	धरती के फूल	10
3	सूरज / मछली	11
4	लूर	12
5	भारत के चौहद्दी / हमरो देश	13
6	टेलीस्कोप / रडार	14
7	बोली / टेलीफोन	15
8	बगिच्चा	16
9	कोल–कोलासी	17
10	विटामिन बी / फल	18
11	विटामिन डी	19
12	विटामिन सी. ए.	20
13	रातकौं–सरंग 1–2–3	21
14	कोरोना	22
15	राफेल	23
16	नीतू–मीतू	24
17	कम्प्यूटर	25
18	दिवाली	26
19	सरकारी इस्कूल	27
20	चकाचक 1–2	28
21	ठेला गाड़ी	29
22	दिन–महीना	30
23	डर	31
24	चारो भाय	32
25	नाप–तौल	33
26	थर्मामीटर	34

कविता क्रम		पृष्ठ संख्या
27	मालिक	35
28	जैहें नै	36
29	15 अगस्त	37
30	बिहार	38
31	ज्ञान पहेली 1,2,3	39
32	बराती (गीत)	40
33	खेल	41
34	रेले गाड़ी	42
35	सूरज सें पहिनें (गीत)	43
36	मजगूत	44
37	हल्ला नै	45
38	सावधान	46
39	अघौंन	47
40	खबौनी	48
41	लेटम सेट	49
42	अच्छा	50
43	पानी	51
44	ललकी कनियां	52
45	भुइंयाँ	53
46	सिलौट	54
47	नाना के दोना	55
48	आवाज	56
49	सीखौं	57
50	गौरव गाथा	58
51	पुरनका खेल	59
52	छाता	60
53	ताला / चिडियाँ	61
54	दादी के बात	62
55	परिचय	63

प्रकाशकीय निवेदन

अच्छे भविष्य के लिए आज की पीढ़ी का सम्यक विकास हमारी वर्तमान व्यस्क पीढ़ी का ही दायित्व है। लेखक, कवि, चिंतक, शिक्षक, पुस्तक प्रकाशक, पत्र–पत्रिकाओं तथा जन संचार के अन्य माध्यमों को यह दायित्व स्वीकार करना पड़ेगा। बाल–मनोविज्ञान का गहन बोध, उनके कोमल मनोभावों को पकड़ पाने वाली संवेदनशील अनुभूति, सहज कल्पनाशीलता और सुगम अभिव्यक्ति बाल साहित्य के रचनाकार के आवश्यक गुण हैं। प्रस्तुत कविता संग्रह के रचयिता श्री एस. के. प्रोग्रामर अंगिका के जाने–माने कवि हैं। इनकी रचनाओं में मनोरंजन का तत्व तो भरपूर है ही, जो कि बालक–बालिकाओं की रूचि जाग्रत करने के लिए आवश्यक है, साथ ही ये उद्येश्य परक भी हैं। हम कल के नागरिकों से किस दिशा में विकास की अपेक्षा रखते हैं, यह इनमें सहज समाहित भाव है।

कई वर्षो से 'थावे विद्यापीठ' एवं 'जिज्ञासा संसार' पत्रिका द्वारा जनपदीय भाषाओं के प्रचार–प्रसार, संवर्धन एवं विकास पर काम किया जा रहा है। इस क्रम में भोजपुरी विशेषांक' एवं 'अंगिका विशेषांक' भी प्रकाशित हुआ है। इस अभियान को रफ्तार देने के लिए 'जिज्ञासा संसार' द्वारा प्रकाशन की स्थापना की गई है, जिसकी यह पहली प्रस्तुति है। भारत सरकार की नई शिक्षा नीति भी स्थानीय और जनपदीय भाषाओं के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा देने की वकालत कर रही है।

आशा है हमारे प्यारे–प्यारे बाल पाठक, उनके अभिभावक और शिक्षक इस कृति को रोचक एवं उपयोगी पाएंगे। साथ ही नई शिक्षा नीति लागू होते ही इस पुस्तक को पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया जाएगा।

— प्रकाशक

भूमिका

"धरती के फूल" अंगिका के चर्चित कवि "सुधीर कुमार प्रोग्रामर" के बाल कविता रो संग्रह छिकै, जेकरा में किसिम–किसिम के भाव–भंगिमा के कविता छै। है कविता में जे हम्में डुबलोॅ तँ घंटा भर तक बेरोक टोक बहतेँ रहलौं। है कवित संग्रह में युग चिंतन कॅे साथें–साथ गाँव–घरोॅ रो बच्चा सिनी के सरोकार रो कविता छै। छंदयुक्त कविता सिनी में गजब रो रवानी छै, जेकरा याद करै मेँ बच्चा सिनी के कोय दिक्कत नै होतै।

कवि, बेटा–बेटी मॅ कोय फरक नै करै छै, यै सॅ साफ–साफ कहै छै– "ई धरती पर दू ठो फूल/बेटा–बेटी चल इस्कूल।"

संग्रह में ताला, छाता, बराती, नापतौल, बोली आदि पर ही कविता नै छै, बल्कि टेलीस्कोप, रडार, टेलीफोन, भारत के चौहद्दी, विटामिन ए.बी.सी.डी., कोरोना, कम्प्यूटर, राफेल, थर्मामीटर, विज्ञान आदि सें जुड़लोॅ विषय पर भी मनोहारी कविता छै। है कोरोना काल में बच्चा सिनी कॅ सलाह दै छै–

"काढ़ा पीयोॅ मास्क लगाबोॅ/केकरो घर नै आबोॅ–जाबोॅ।"

यही नै, खेल–खेल में बच्चा के कत्तेँ बड़ोॅ बात कही दै छै–

'राजधानी पटना कहलाबै/शिक्षक गोलघरोॅ टहलाबै"

"बोधिबृक्ष छै राज्य प्रतीक/अंगिका भाषा लागै ठीक।"

कवि लोक संस्कृति के प्रति आग्रही छै। हुनी चाहै छै कि लोक संस्कृति कॅ विकसित करी के देश–समाज के गति कॅ ठीक करलोॅ जाय। यही कारण छै कि छोटोॅ–छोटोॅ बातोॅ पर भी हुनको धियान जाय छै। हुनी कहै छै–

"आगिन मॅ पकबै फूंकी कॅे/खो तनटा रूकी–रूकी के।"

या फिर – "मत फेकोॅ जानी के पानी/राखोॅ खुच्चोॅ खान्हीं–खान्हीं।"

स्थानीय से ग्लोबल तक रो चिन्ता कवि के छै। हुनी साफ कहै छै –

"देशोॅ कॅे कुछ नेता चाही/सीमा पर कुछ बेटा चाही।"

यै तरह सेँ अंगिका के रससिद्ध कवि "सुधीर कुमार प्रोग्रामर" नेँ शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान आदि सॅ जुड़लोॅ मनभावन कविता संग्रह "धरती के फूल" तैयार करनेँ छै, जे सब्भें के जरूर पसंद ऐंतै आरो अंगिका साहित्य के काब्य–भंडार भी समृद्ध होतै। है पुस्तक लेली हमरोॅ बहुत–बहुत बधाय।

— **डॉ. शिवनारायण**

संपादक, नई धारा, पटना

बड़का तन–मन के मालिक होय छै, आरो बच्चा खाली मन के। हमरा लागै छै कि बच्चा पर लिखना जेतना आसान छै, बच्चा लेली लिखना ओतनें कठिन। बच्चा आपनों स्वभाविक गति से विकास करै छै आरो हरदम मदारी के तरह बड़का के नचाय मारै छै। मोबाइल के दौर में तें पढ़ाय मारै छै। एतनै नै बाबू हो पानी पीबै, माय गे सू–सू करबै, दादा हो जुत्ता पीन्हबै, दादी गे सुतबै। यहा रकम बच्चा मदारी आरो बड़का (बन्दर) के तरह ओकरो जिद्द आरो फरमाईस पर नाचतें रहै छै। मनें बड़का बंदर, आरो बच्चा मदारी।

डॉ शिवनारायण बाबू के प्रस्ताव आरो दिलाधिकारी कुमारी अनिता सिन्हा के समर्थन पर अंगिका बाल कविता संग्रह के नाम **''धरती के फूल''** राखलो गेलै। एकरा में बाल–मनोविज्ञान कें ध्यान में राखी के, अंगिका व्याकरण के परिधि में रही कॅ हिन्दी से सटलों अंगिका भाषा में कविता शामिल करै के प्रयास करने छियै। अंगिका वर्तनी समझै के खियाल सें कभर पेज के पीछू हिन्दी–अंगिका प्रयोग के कुछ संकेत मिलतै। **''धरती के फूल''** में प्रेरक कविता के साथें देश, राज्य, प्रकृति, विज्ञान, स्वास्थ्य, गणित, खेल, नाप–तौल, पहेली समाहित करी के मनोहर आरो गीत–मय कविता बुनै के प्रयास छै। भीतर कुछ शब्दार्थ भी मिलतै। हमरा विश्वास छै कि बच्चा–बूतरू कॅ पढ़ै में आरो परिजन–गुरूजन कॅ पढ़ाबै में जरूर हौला लागतै। प्रेरणा लेली कविवर हीरा प्रसाद हरेन्द्र आरो भाय राहुल शिवाय के अभिनंदन।

संकलन के अगला संस्करण आरो बढ़िया बनें, एकरा लेली कमीं–बेसी, के तरफ जरूर ध्यान देलैबै। हमरा अच्छा लागतै आरो बच्चा के असानी होतै।

–जय अंगिका

विनती

माय सरोसती आबों–आबों
हमरा सब के लूर सिखाबों

ई धरती पर तोहीं ज्ञानी
विद्या दीहों विद्या दानी

पढ़ै लिखै मॅ मोन लगाबों
माय सरोसती आबों–आबों।

अर्थ :–
लूर – बुद्धि
तोंही – तुम्हीं
मोन – मन

धरती के फूल

ई धरती पर दू–ठो फूल
बेटा–बेटी चल इस्कूल

आँखीं के तारा सब बच्चा
खूब दुलारों मन के सच्चा

पढ़ी–लिखी कें झुलवा–झूल
बेटा–बेटी चल इस्कूल।

अर्थ :–

इस्कूल – स्कूल

दुलारों – प्यारा

झुलवा – झूला

सूरज

सूरज पूरब सॅ आबै छै
रौदा सगरे फैलाबै छै,

रोज घुमीं पछिम मेँ आबी
रात–भरी ऊ सुसताबै छै
फेरू पूरब सॅ आबै छै।

मछली

पानी में मछली हेलै छै
पंखी से पानी ठेलै छै।
कूदै फानै डुबकी मारै
बचकानी भी सेखी झारै।

जाड़ा गरमी सब झेलै छै
पानी में मछली हेलै छै।

लूर

बढ़ियां से राखौं सब बसता
मन कॅ राखो हरदम हँसता
लूर जरूरी आरो ससता
बायां तरफें चलिहौं रसता।

रूक्खों–सुक्खों सब खैने जा
बढ़िया सैं सब बतियैने जा
मिली–जुली रहला से बाबू
भारी काम लगै छै ससता,
बढ़ियां से राखौं सब बसता।

अर्थ :–

बस्ता – कॉपी–किताब

रूक्खों–सुक्खों–जो भी
खाना मिले

बतियैनें – गपशप

भारत के चौहद्दी

उत्तर दिशा हिमालय सोभै
दक्षिण हिन्द महा–सागर
पूरब मॅ बंगाल के खांड़ी
पश्चिम दिशा अरब–सागर।

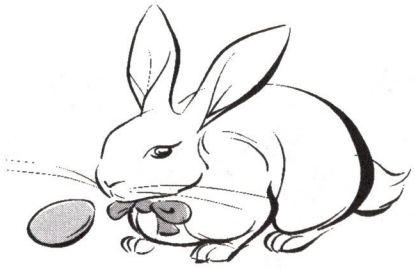

हमरौं देश

कर्त्तें सुन्नर हमरौं देश
भीतर सैतीस ठो परदेश
बौसी के मंदार अंग सैं
दुनियां में बाँटै संदेश।

शब्दार्थ :– अंग – अंग प्रदेश
मंदार– मंदार पर्वत

टेलीस्कोप

वाह–वाह टेलीस्कोप
दूर के देखौं बाइस्कोप,
सीमा पर दुश्मान कॅ टेबी
बरसाबै गरदौवा तोप।

रडार

दुनिया भर में छै परचार
उड़बै वायुयान रडार,
खतरा के अंदेशा देखी
जोड़ै बे–तारौं के तार।

शब्दार्थ :–
टेबी– देखकर, बाईस्कोप– सिनेमा, दृश्य
गरदौवा– दनादन, परचार– प्रचार
अनदेशा– संका

बोली

कौवा बोलै काँव–काँव
कोयल बोलै कू....
बिल्ली बोलै म्याऊं–म्यांऊ
कुत्ता बोलै भू....
बादल गरजै गड़–गड़
अंधर बोलै हू...।

टेलीफोन

अलबत्ता छै टेलीफोन
बाजै छै झमकौवा टोन
टीवी रेडियो मोबाईल में
पढ़ौं–पढ़ाबों आपनो मोन

जे बढ़िया से पढ़े लिखै छै
ओकरा घर में आबै धोन।

शब्दार्थ :–
झमकौवा – मनपसंद, छोन – धून

बगिच्चा

छुट्टी होलै चलें बगिच्चा
वहीं खेलबै दोल–दोलिच्चा
गाछी से पत्ता टपकै छै
बच्चा दौड़ी के लपकै छै।

रखबारों गरजै तॅ बच्चा
सरपट दौड़ै लीया–उच्चा।

अर्थ :–
दोल–दोलिच्चा – डाली से लटक कर
खेलने वाला खेल
लीया – गढ्ढा
रखबारों – रखवाला
सरपट – विना रूके

कोल–कोलासी

कोल–कोलासी, भादो मासी
कोलपद्दी लागै छै बासी
चुटकी सॅं उछली बतलाबै
कन्नें दिल्ली, कन्नें कासी।

कच्चा आमी के बीचों में
चिक्कन लागै छै नीचों मॅ
चीरै हँसुआ धार गढ़ासी
निकलै गुठली कोल–कोलासी।

शब्दार्थ:
कोलासी – कच्चा आम के बीच से
निकले वाला उजला आठीं,
कोलपद्दी– रोगी आम के टिकोला
कन्ने – किधर, चिक्कन –
चिकना

विटामिन–बी

बी के कमीं से बेरी–बेरी
लकबा तक मारै छै घेरी
अंड़ा, दाल, सही उपचार
ई खैला से रोग फरार।

फल

फल के राजा पक्का आम
राजा के मंत्री लाताम
देखी, मुँह में पानी आबै
देश विदेश सनेस पठाबै।

अन्धर–बौखी में जे गिरै
आचारों ले कच्चा चीरै
सस्तों रहे कि जादे दाम
सब चोभै जेठम्मा आम।

विटामिन–डी

बैठी कें मत कर ही–ही
पढ़िहें चलें विटामिन–डी।
डी कमला से फेरा लागै
हड्डी–गुड्डी टेढ़ा लागै।

मछली, अंडा दूध व घी
ई मॅ बसै विटामिन–डी।
तापी–तापी भोरकों सूरज
मँगनी लूट विटामिन–डी।

शब्दार्थ :–
कमला – कमी से, बसै – रहता है
भोरकों – सुबह का, मँगनी – मुफ्त

विटामिन सी. ए.

सी के कमीं, नाक सें पानी
छिक्कै, खोखै कानी–कानी
फुलै मसूड़ा, देह टटाबै
हलफै जब इस्कर्बी आबै।

मिर्च, टमाटर नेमों, गारों
नारंगी फल सबके प्यारों
चलै बनै तॅ पीयों मठ्ठा
देहों में आबै छै चठ्ठा।

ए के कमी रतौनी लागै
हरा साग–सब्जी सें भागै
विज्ञानों के कहना मानी
नाकों सें नै चुथौं पानी।

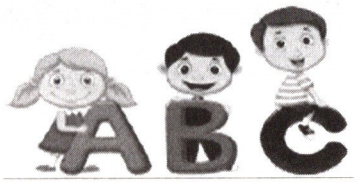

शब्दार्थ :– हल्फै – तेज बुखार
चठ्ठा – ताकत
चूथौं – टपकना

रातकौं–सरंग

1

साँझ पड़ै तॅ निकलै तारा
टिम–टिम चमकै बड़का जेरा
चंदा मामा छै रखबारों
बादल उमड़ै कारों–कारों।

2

बादल दौड़ै पनरें कोस
बाघ बनै कखनू खरगोश
लागै छै सब जिगरी दोस
मिंघरी के सब्भें बेहोश।

3

चंदरमाँ कें बाधा होय छै
कटतें–कटतें आधा होय छै,
पनरे दिन में पूरा चाँन
रोज करै दादी गुणगान।

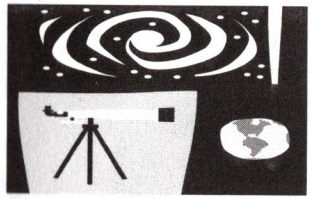

शब्दार्थ :– जेरा– झुंड
कारों – काला
मिंघरी – मिटाना

कोरोना

हर देशों में एक्के–रोना
कहाँ से ऐलै रोग करोना
स्कूल कॉलेज बंदी–बंदी
व्यापारों में सगरे मंदी।

काढ़ा पीयों मास्क लगाबों
केकरो घर नै आबों–जाबें।
कोविड–19 नाम बताबै
जेकरा पकड़ै खूब सताबै।

आक्सीजन के चक्कर लागै
डोंर सॅ सौसे दुनिया जागै।
गाछ लगाबों, रोग भगाबों
बंद करों सब रोना–धोना
चलों भगाबों रोग करोना।

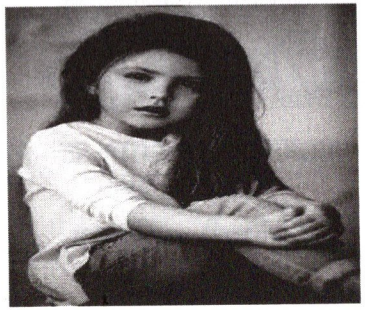

राफेल

चलें खेलबै सचका खेल,
ऐलौ छै पँच–पँच राफेल।
सैनिकों के तोफा मिल्लै
दुश्मन केरों धरती हिल्लै
जे भी आबी छलमल करतै
सीधे मरी जहन्नुम जैतै।

जे रखतै भारत से मेल
जोरी के रखबै राफेल
नै तॅ जड़–मुंड़ी से करबै
सब दिन लेली खतमें खेल।

शब्दार्थः
मिल्लो – मिला है
झांपी – ढककर
जड़–मुन्ड़ी– नामो–निशान नहीं रखना

नीतू–मीतू

नीतू – कंथा पुरनका अभियो धरलौं
बिजली से पहिनें की बरलौं?

मीतू – पहिनें डिबिया, लालटेल बरलै
तब बिजली के खम्भा गड़लै
खम्भा ऊपर मोटका तार
सगरै छै बिजली भरमार।
नीतू – बाद में आरॉ की–की ऐलै..?

मीतू– झालर बाला रस्सी ऐलै
बिजली पंखा बत्ती ऐलै
सगरे चक–चक करै ईनोर
लागै अधरतिया के भोर।

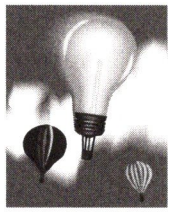

फोन–मोबाइल, टीवी, ए.सी.
बढ़लै सुखिया घर के सेखी
पाँच मिनट में टंकी भरलै
पहिनें डिबिया, लालटेल बरलै।

शब्दार्थ :– बरलै – जलना
सेखी – फैसन/सौक–मौज

कम्प्यूटर

बहुत जरूरी छै घर–घर
सबके लेली कम्प्यूटर।
की–बोर्ड, माउस, मोनिटर
हर कामों में कम्प्यूटर।

स्कूल–कॉलेज गाछी तर
चलौं पढ़ै लें कम्प्यूटर।
डी. एम., सी. एम. या डाक्टर
सब के लेली कम्प्यूटर।

हिन्दी सें अंग्रेजी कर
पारंगत छै कम्प्यूटर।
नक्शा–तिल्ला फारम भर
तरह–तरह के कम्प्यूटर।

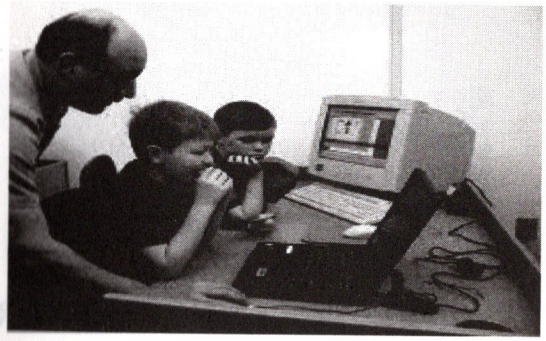

दिवाली

डुबथैं सूरज दीप जलाबॉ
दरबज्जा कॅ खूब सजाबॉ
हुक्का पाती, बनै सनाठी
राकेट बम लॅ बारॉ काठी।

खेल खेलौना रहतै याद
हथिया–घोड़बा के परसाद।
जगमग सबके लागै पक्का
फुटै पड़ाकी लागै धक्का।

अगला साल घुरी के आबॉ
दरबज्जा के खूब सजाबॉ।

शब्दार्थः
दरबज्जा – देहरी, घॉर – घर
हुक्का पाती – सनसनाठी को
बना खिलौना काठी–माचसि,

सरकारी स्कूल

1
इस्कूल लाल गुलाबी छै
मैडमें जिम्मां चाभी छै
रोज पहाड़ा लिखनें चल
कथा कहानी सीखनें चल।

2
पढ़ै के घरिया आगू ताक
मिलतौ एक–रंगा पोशाक
सरकारिये किताबों मिलतै
माय–बाप के मुखरा खिलतै।

बड़की कॅ साईकिल मिललै
छोटकियों भी साथें चललै
शान से बोलै करबै फस्ट
चाहे केतनों होतै कष्ट।

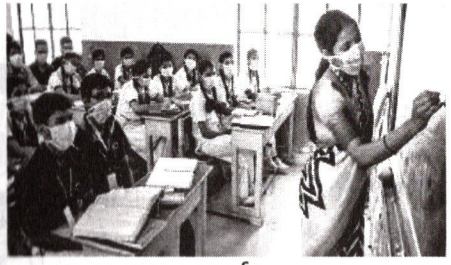

शब्दार्थ :–
मैडम जिम्मा – मैडम के पास
घरिया –वक्त। मुखरा – चेहरा

चकाचक

1

नयका सूरज, नयका भोर
खेत लगै छै हरा–किचोर।
सगरे गाछ, गाछ के घेरा
गाछी पर चिड़ियाँ के डेरा।

2

गल्ली पक्की, नल्ली पक्की
इस्कूल के छरदल्ली पक्की
गाँव–घरॉ के काम चकाचक
रैन–बसेरा लगै झकाझक।

तरह–तरह के परब–तिहार
कत्ते सुन्नर नया बिहार।

शब्दार्थः

हरा–किचोर – हरा–भरा
छरदल्ली – चारो ओर घेरा
सगरे – सभी जगह
रैन–बास – यात्री निवास

ठेला गाड़ी

तरह–तरह के ठेला गाड़ी
दौड़ै बिना झमेला गाड़ी
खेल–खेल में, घूरों मेला
घींचें गोपी, ठेल सुहेला।

अपन्हैं बैठों, लाधों बोझा
जन्नें चाहों हुन्हैं सोझा
पहुँचै खेतों, बारी–झाड़ी
बिना तेल के ठेला गाड़ी।

अर्थ :–

घूरों – घुमना–फिरना
घींचै – खीचना
ठेल – ठेलना
झमेला – परेशानी
लाधों – लादना

दिन–महीना

दिऩ –

एक हप्ता में सातो दिन
अंगुरी पर जल्दी सें गिन
एक सोम, दू मंगलवार
बुध तीन, गुरू गिनें चार
शुक्कर पाँच, छो शनिच्चर
सतमां एतबारो कें घर।

महीना

चैत बैसाख जेठ महीना
गरमी में दिक्कत छै जीना
आषाढ़, सावन, भादो आबै
वर्षा कादो–कादो लाबै
आसिन, कातिक, अगहन, पूसों
जाड़ों में आगिन–तर घूसों
छै माघों के बादे, फागुन
रंग लगाबों रगड़ों साबुन।

अर्थ :–
हप्ता – सप्ताह के सात दिन
कादो – कीचड़
आगिन–तर– आग के पास
बीहा – शादी

डर

बादल गरजै गढ़–गढ़–गढ
मेढ़क बोलै टर–टर–टऱ
छपरी चुवै छर–छर–छर
ठनका ठनकै हड–हड़–हड़
धरती दलकै थर–थर–थर
झरना गीरै झर–झर–झर।

ठनका मॅ गाछी–तर डर
लोहा के छाता सें डर
भींगो तॅ सर्दी के डर
सबसें बढ़िया आबों घर
घर में नै लागै छै डर।

अर्थ :–
हडबड़– जल्दी–जल्दी
झरिया – बर्षा
गाछी–तर– गाछ के नीचे
डर– भय, मलकै–चमकना,
दलकै – थरथराना

चारो भाय

छोटका–बड़का चारो भाय
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाय
धोती, कुरता, लूंगी, पगड़ी
आपस मैं नै झगड़ा–झगड़ी।

खेत में उबजै दाना–पानी
धरती कहलाबै महरानी
गेहू चावल, चना खेसारी
हर मौसम मैं पारी–पारी।

राखी बान्हैं बहिनी कलाय
छोटका–बड़का चारो भाय।

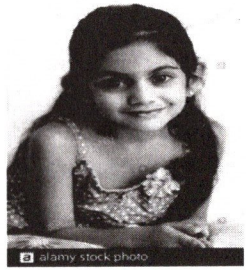

अर्थ :–
दलहन– दाल के अनाज
उबजाबै – उपजाबै
बहिनी – बहन

नाप–तौल

1
पौवा सेर पसेरी जानों
कीनीं–बेची जे भी लानों
चालीस सेरों के एक मन
खेत मैं उबजै बड़का धन
सौ सेरों के एक क्विंटल
दस क्विंटल के पक्का टन।

2
नै रहलों छै छोटों सिक्का
बचलै तॅ एक टकिये सिक्का
कागत जे बोलै से मानों
पौवा सेर पसेरी जानों।

अर्थ :–

सेर	– किलो
मन	– 40 किलो
क्विंटल	– 100 किलो
एक टन	– 1000 किलो
कागतें	– कागज के
टकिया	– रूपया
नमरी	– 100 रूपया

थर्मामीटर

बौखारों से जखनी काँपै
थर्मामीटर तखनी नापै,
दम फूलै तॅ छाती चापै
आला से धड़कन के नापै।

रेनगेज सें बरसा नापै
ग्राम–भरी सें सोना नापै
मीटर–गज सें कपड़ा नापै
हवा दाब बैरोमीटर सॅ
तापमान पैरो सें नापै,
दम फूलै तॅ छाती चापै।

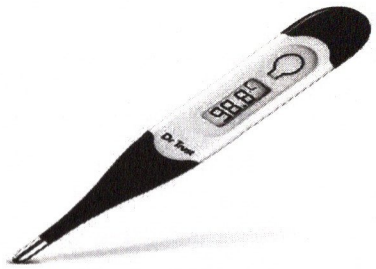

अर्थ :–
भरी – 1 भर में 10 ग्राम
पैरो – पाइरोमीटर

मालिक

देश के मालिक पी.एम.साहब
परदेशों के सी.एम. जी,
परखंडों के बिडियो साहब
जिला के मालिक डी.एम. जी

नगर–निगम के सभापति जी
पंचायत के मुखिया जी
जेकरा सॅ जुड़बै छै सब्भें
गाँव–घरों के दुखिया जी।

अर्थ :–
पी.एम.– प्रधानमंत्री
परदेशो– राज्यों
सी.एम – मुख्यमंत्री
डी.एम. – जिलाधिकारी
जुडबै – जरूरत पूरा

जैहें नै

नद्दी किच्छा जैहें नै
गिरलौं–पड़लौं खैहें नै
खाना सैं पानी पी दूना
रौद–बतासी रैहें नै
नद्दी किच्छा जैहें नै

शौचालय बाहर मत जो
बिना हाथ धोने मत खो
बढ़ियां जो बनना छौ नूनू
समय सॅ पहिनें इस्कूल जो।

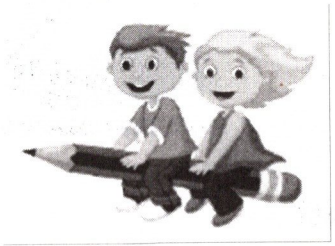

अर्थ :–
किच्छा– किनारा
जैंहें– जाओ
रैहें– रहना

15 अगस्त

पनरे अगस्त, पनरे अगस्त
भोरे–भोरे सब अस्त–ब्यस्त
झंडा फहरै छै बांसौं में
राष्ट्रगान बसलौं सासों में।

भारत के ई राष्ट्र परब छै
मनबै सावा एक अरब छै
बच्चा सब झूमै मस्त–मस्त
पनरे अगस्त, पनरे अगस्त।

अर्थ :–
अस्त–ब्यस्त – काम में परेशान
परब–पर्व
मनबै–मनाना

बिहार

उत्तर में नेपाल विराजै
झारखंड दक्खिन में हो
पूरब में पश्चिम बंगाल छै
यू. पी., छै पश्चिम में हो।

राजधानी पटना कहलाबै
शिक्षक गोल घरौं टहलाबै
बोधिबृक्ष छै राज्य प्रतीक
अंगिका भाषा लागै ठीक।

अर्थ :–
विराजै –मौजूद
दक्खिन–दक्षिण
यू.पी.– उत्तर प्रदेश
अंगिका – अंगिका भाषा

ज्ञान पहेली

1
हरा–हरा पंख जेकर, लाल–लाल ठोर
पिंजरा सें बोलै छै, भोर–होलै भोर
जेकरा छै बढिया सन घौंर नै खोता–की छिकै....

2
बाघ केरो मौसी, घरे–घर मेँ घूसों
म्याऊं–म्याऊं बोली के पकड़ै छै मूसों
जैसनों छै पटना, वैहिनें दिल्ली– की छिकै.....?

3
हरदम जे आक्सीजन छोड़ै
देवता–पीत्तर लै सब तोड़ै
रोज चिबाबौं हुलसी–हुलसी– की छिकै.....?

अर्थ :–
घौंर– घर
खोता – घोंसला
घूंसो – घुसना
हुलसी– खुश होकर
उत्तर :– 1. –तोता 2. बिल्ली 3. तुलसी

बराती गीत

घोड़ा नाचै, हाथी नाचै
नाचै खूब बराती जी
दुल्हा नाचै दुल्हिन नाचै
नाचै संगी–साथी जी।

तासा–मस्सक बाला नाचै
नाचै साली–साला जी
पंडित जी छीटै छै पानी
मड़बा पर बरमाला जी।

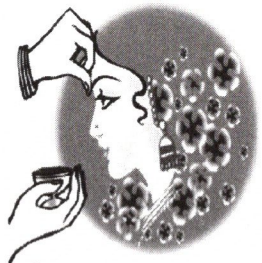

अर्थ :–
मस्सक – एक प्रकार का बाजा
छीटै – छिटना
मड़वा – विवाह का मंडप

खेल

चलें खेलबै सेल कबड्डी
बरियौं होतै हड्डी–गुड्डी
पानी में सीखें हेलै लॅ
रोज साँझ निकलें खेलैलॅ
दौड़ी के फेकें फुटबॉल
मारभैं लंघी होतौं फॉल
जाल के दोनों पार खेलाड़ी
भौलीबॉल में खंभा गाड़ी।

लूड़ो खेल खेलाड़ी चार
ताली–बित्ती खेत–खम्हार
तास घरो कॅ नाश करै छै
अंत्याक्षरी पास करै छै ।

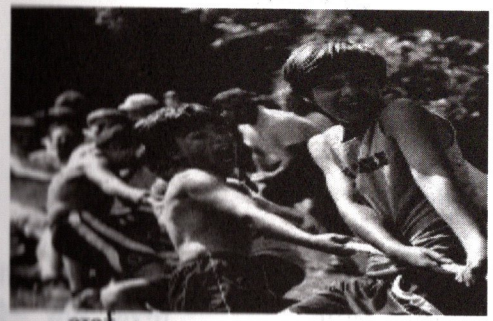

अर्थ :–
बरियौं– मजबूत
लंघी – धोखे से पैर में पैर फसाना
फॉल – दोषी (जुर्माना)

रेले गाड़ी

छुक–छुक–छुक इ रेल गाड़ी
ढूवै रोजे–रोज सवारी
एगो ऐली, एगो गेली
फेरा–फेरी, पारा–पारी।

पटना से दिल्ली भी गेली
घुरी–फिरी के फेरू ऐली
आबी के टीशन में खाड़ी
छोटका–बड़का करौं सवारी।

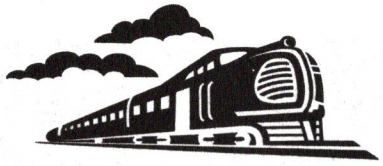

अर्थ :–
एगो–एक
ढुवै– ढोना
फेरू– फिर
टीशन – स्टेशन

सूरज सें पहिनें (गीत)

जे सूरज सॅ भी पहिनें रोज, भोरे–भोर जागै छै
वही चैटिया कें जीवन भर, पढ़ै मॅ मोन लागै छै।

विषय सबटा लगै हलके, सिहारै पाठ जे कल के
कि ओकरा देखथैं धड़फड़ बगल से रोग भागै छै
जे सूरज सॅ भी पहिनें रोज, ...

जे खेलैं मैं बहादुर खूब, राखै छै मनों मैं हूब
वही सीमा के दुश्मन पर, दनादन तोप दागै छै
जे सूरज सॅ भी पहिनें रोज, ...
वही चैटिया कें जीवन भर पढ़ै मॅ मोन लागै छै।

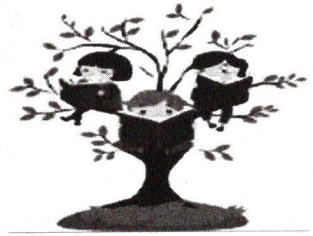

अर्थ :–
चटिया– छात्र
सिहारै– याद करना
कलके– कल बाला
खेलैं–खेल में
हूब– उमंग

मजगूत

करौं नै कचरा कॅ बरबाद
बनाबौं एकरौं बढ़िया खाद
खेत में फेकौं, भादो बाद
इ नुस्खा सब दिन राखो याद।

मींहा बैल कड़ामौं टटिया
मजगूत राखें खुरपी–कचिया
जोतौं–कोड़ौं खेत कियारी
फसल उगाबै में होशियारी

अर्थ :–
मींहा – खंभा
कड़मौं – मवेसियों को एक साथ
बाँधने वाला रस्सी
जोतौं – खेत जोतना
कोड़ौं – कोड़ना

हल्ला नै

पढ़ै लिखै में कल्ला नै
काम के घरिया हल्ला नै
बदमासी जो करभै तॅ
मिलथौं तब रसगुल्ला नै

भूंजा भर–भर गल्ला नै
जादे तेल मसल्ला नै
घौंर रहें या कि इस्कूल
कखनू हल्ला गुल्ला नै।

अर्थ :–
कल्ला – आलस
घरिया – समय
हल्ला–गुल्ला –शोरगुल

सावधान

बिजली के बरबादी रोकों
बचकानी सब शादी रोकों
झगड़ा मार–फसादी रोकों
बिजली के बरबादी रोकों।

बीच सड़क पर चलना खतरा
टायर के जलना भी खतरा
आँखों जादे मलना खतरा
बीच सड़क पर चलना खतरा।

अर्थ :– जादे – अधिक
बचकानी – बच्चा वाला
दुवे – दो ही
मार–फसादी – खून खराबा

अघौंन

काटै–बान्है भरी अघौंन
धान के बोझा लानै जौंन
नो बोझा में बोझा बौंन
कोठी भरलै चालिस मौंन।

धान बेची के कर्ज चुकैबै
कूटी–पीसी पिट्ठौं खैबै
तब लेबै मोबाईल फौंन
काटी–बान्हीं भरी अघौंन।

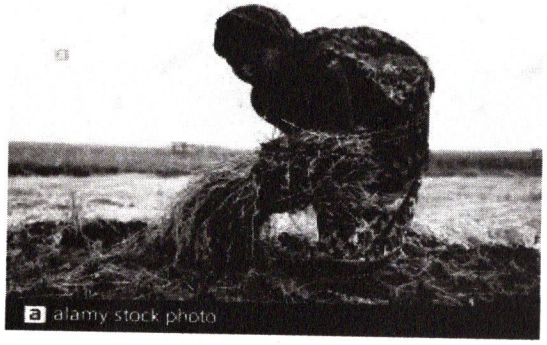

शब्दार्थ :–
बान्है–बाँधना, जोन–मजदूर
बोन–मजदूरी, अघोन–अगहन माह
मोन–मन (अनाज–एक मन, दू मन)
कूटी–पीसी –कूट–पीसकर

खबौनी

नाना कथा–कहानी कहतै
तोता–मैना, नानी कहतै
दादा हमरा साथें रहतै
दादी परी कहानी कहतै।

छुट्टी में मस्ती तब आबै
पापा जब आलू–चप लाबै
छठ परबों में मैया सहतै
हमरा, टाभ, खबौनी लहतै।

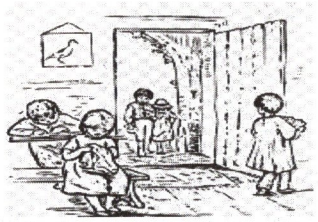

शब्दार्थ :–
हाँथें – हाथ में
बस्ता – कॉपी–किताब
बद्धी – गला में पहने वाला धागा
खबौनी – पकवान
सहतै – उपवास रहना
लहतै – मिलना

लेटम सेट

रस्ता पैरा पानी–पानी
बच्चा कूदै जानी–जानी
छड़ी बजाड़ै थुर्री पारै
सब गोस्सा पानी पर झारै।

अंगा पैंटा लेट्टम–सेट
खेल–खेल में होलै लेट
दोसरों दिनां आना–कानी
रस्ता पैरा पानी–पानी।

शब्दार्थ :–
थुर्री – ओठ दबाकर फूंकना
अंगा – कमीज
पैंटा – पैंट
तुतरू – बाजा
लेट्मसेट– कीचड़ लगना
आना–कानी – आलस करना

अच्छा

टेबी–टेबी खिच्चा–खिच्चा
भुट्टा तोड़ी लानें बच्चा
आगिन में पकबें फूंकी कें
खो तनटा रूकी–रूकी कें।

नीम जरा तित्तों लागै छै
पकला पर मिठ्ठों लागै छै
गुद्दा खायकें फेकों बिच्चा
टेबी–टेबी खिच्चा–खिच्चा।

शब्दार्थ :–
टेबी – खोजकर
पकबै – पकाना
तित्तों – तीता

पानी

मत फेकों जानी के पानी
राखौं खुच्चों खान्हीं–खन्हीं
दिक्कत होला से पहिनें सब
चलों बचाबों कनकन पानी।

जब भी पीयों छानी–छानी
खूब सीसोहों टटका पानी
नो बजथैं सूतै के घरिया
तानों पहिनें मच्छरदानी।

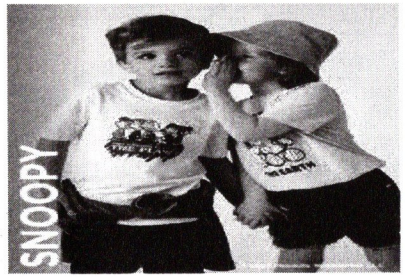

शब्दार्थ :–
खुच्चों – गढ्ढा, दिक्कत – परेशानी
कनकन – ठंढ़ा, औवल – बढ़िया
सीसोहों – सरपट पीना
टटका – ताजा

ललकी कनियां

दू पहिंयाँ के बरदा गाड़ी
ललकी कनियां ललका साड़ी
बच्चा–बुतरू उछलै कूदै
हुलकै घोंघों खूब उघारी

ढोल नगाड़ा बाजै राती
आबै जखनी बोंर–बराती
धड़–धड़ाधड़ उड़ै पड़ाका
सगरे लागै धूम–धमाका
गाड़ी पर छै डाला–हाड़ी
दू पहिंयाँ के बैलें गाड़ी।

शब्दार्थ :–

बरदा – बैल, हुलकै– निहारना
घोंघों – घुंघट, ललकी – नया
उघारी – उठाकर/फैलाकर
डाला–हाड़ी – संदेश वाला डलिया

भुईयां

धरती कॅ बोलै छै भुइंयाँ
भुइंयाँ पर खान्है छै कुइंयाँ
होम–जाप जखनी हूवैं छै
गम–गम सगर करै छै धुइंयाँ।

कत्तों गरम रहें ई धरती
कनकन पानी दै छै कुइंयाँ
दादी–नानी साथ मिलै तॅ
घोघो तानै दोनों गोइंयाँ।

शब्दार्थ :

भुइंयां–धरती
खन्है – खोदना
कनकन – ठेढ़ा
सगर – आस–पास के सभी जगह
घोघो – माँथे पर साड़ी रखना, घुंघट
गोइंयां–जोड़ीदार

सिलौट

वकील–जज के कारौं कोट
टेबुल पर मारै छै चोट
डॉक्टर, टीचर, बनैं सॅ पहिनें
नाम पहाड़ा लिखै सिलोट।

देशो कॅ कुछ नेता चाही
सीमां पर कुछ बेटा चाही
जेकरा नै नीयत मैं खोट
ऊ खैतै काजू अखरोट।

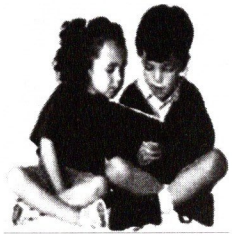

शब्दार्थ :–
खल्ली – चौक
खोट – खराबी
जेकरा – जिनको
खोट – खराब आदत

नाना के दोना

नाती–नाती बोलै नाना
साथें खेलै लाठी–बाना
सबटा लीला देखै मामी
कपड़ा पीन्है दामी–दामी।

छोड़ कन्हैया रोना–धोना
अैलौ नाना लेकें दोना
मोन लागै छै खड़िया मैं
दादी बाँटै छै थरिया में।

शब्दार्थ :–
खूब्बे – बहुत
दोना – मिठाई की टोकरी
आबौं – आइए
दामी – मँहगा

आवाज

घंटी बाजै टन–टन–टन
चूड़ी खनकै खन–खन–खन
पायल बाजै छन–छन–छन
ढोलक बाजै ढन–ढन–ढन
बाजा बाजै गन–गन–गन।

मक्खी भनकै भन–भन–भन
फोन बजै छै घन–घन–घन
पैसा बोलै ठन–ठन–ठन
नूनू बोलै चन–चन–चन
बीर बहादुर सन–सन–सन।

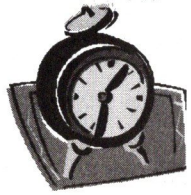

शब्दार्थ :–
खनकै – खनकना
भनकै – भनभनाना

सीखों

अपनों काम करै लें सीखों
लिखलों बात पढ़ै लें सीखों
घर में पसरल रहै चीज तें
सैती रोज धरै लें सीखों

भोरे जागों शीश लबाबों
कसरथ साथें दंड लगाबों
इस्कूल गेला सॅ पहिनें सब
रोज नहाबों मंगल गाबों।

किनखौं सॅ झगड़ा नै करिहों
पूछै सॅ हरगिज नै डरिहों
शिक्षक आफिसर बनिहों तॅ
नाम देश के रौशन करिहों।

शब्दार्थ :–
पसरल – फैला हुआ
सैती – समेट कर
किनखौ – किन्हीं से

गौरव गाथा

आर्यभट्ट, चाणक्य, बुद्ध, व महावीर लेलकै अवतार
सबसे पहिनें विश्वविद्यालय, लोकतंत्र, जीरो उपहार।

बाल्मीकि के रामायण, सीता के धरती कहलाबै
पाँच–पाँच भाषा–भाषी कॅ डेगा–डेगी टहलाबै।

इ धरती पर बहै शान से गंगा जी के निर्मल धार
जीरो सैं हीरो कहलाबै, सबसें पहिनें यहा बिहार।

ग्रहण–

अमावस्या के सूर्यग्रहण पूणिमा के चन्द्रग्रहण

राष्ट्रीय पर्व–

15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस 26 जनवरी गणतंत्र दिवस

पुरनका खेल

कन्ना गुज–गुज, चर–घरबा
कनियां–मनियां, बर–मड़बा

अठ्ठा गोटी, तर–बन्ना
दाय–माय, चुन्नी–चुन्ना

गुल्ली–डंटा, ताली–बित्ती
दौड़ै में मारै छै लत्ती

औका–बौका, बीजू–बन
खेलै में लागै छै मन

सेल कबड्डी, चुक्का पार
घाँस–पात के नथिया हार

एगो लड्डू एगो खाजा
बेटी रानी, बेटा राजा।

साँझें झगड़ा भोरे मेल
बढ़िया छै बचकानी खेल।

छाता

झरिया में छाता
रौदा में छाता

सिक्की के छाता
तारों के छाता

नयका ई छाता
पुरनका उ छाता

भैयों के छाता
बहिनों के छाता

नाना के छाता
दादा के छाता

जखनी भी राखों
मोड़ी के छाता

शब्दार्थ :–
रौदा –धूप
सिक्की – लकड़ी के तिल्ली का
जखनी – जब भी

ताला

हल्का ताला, भारी ताला
हर घर के आगू मतवाला
राजा रहें कि मुंशी लाला
अलग अलग चाभी के ताला
डॉर बिना जोगै रखवाला।

अपनों मन से कहीं न टसमस
बात सुनै छै चाभी के बस
मंदिर मसजिद सें भी पाला
ताला नै भूलै घरबाला।

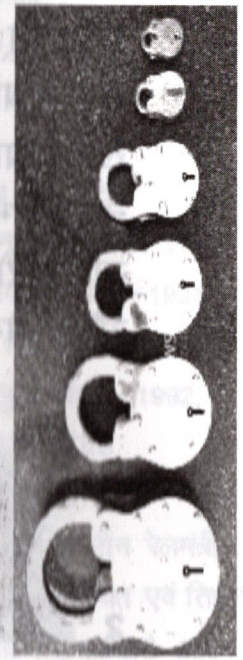

चिडियाँ

चीं–चीं–चीं–चीं चिडियाँ बोलै
अधरा देखी कें मुँह खोलै
हवा बहै तॅ खूब मजा सें
खोंते साथ चिड़ैयों डोलै।

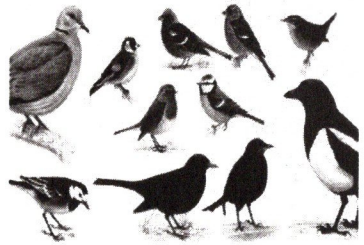

शब्दार्थ :–
डॉर – भय, टसमस – इधर–उधर
अधरा – चोंच से दाना खिलाना

दादी के बात

1

नूनू–नूनू हिन्नें आबों
बढ़ियां बाला गीत सुनाबों
खाना खा तॅं खूब चिबाबों
नूनू कें भी साथ पढ़ाबों
याद करी के रोज सुनाबों
सौसे जीवन मंगल गाबों।

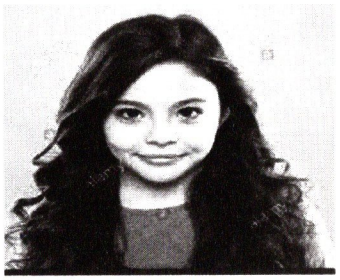

2

रगड़ी–रगड़ी तेल लगाबों
फोड़ा–फुनसी दूर भगाबों
लाहबै में नै आना–कानी
पहिनें ढारों गोड़ पॅं पानी
तब डारा तब कंधा ढारों
यहें रकम ठंढ़ा कें मारों।

शब्दार्थ :–
ढारों – देह पर पानी ढारना
मारों – देर भगाना

नाम :– सुधीर कुमार सिंह
उर्फ :– सुधीर प्रोग्रामर
पिता :– श्री जगदीश प्रसाद सिंह
माता :– श्रीमती सरस्वती देवी
जन्म :– 1ली अक्टूबर 1961
स्थाई पता :– ग्राम+पो0– खड़िया,
जिला–मुंगेर–811211 (बिहार)
शिक्षा :– पी. जी. डिप्लोमा इन सॉफ्टवेयर इन्जिनियरिंग
प्रकाशित कृति :– हिन्दी नाटक:–1. विधवा की बेटी –1991
2 .चमचे का चुनाव, –1991
3. बजरंगवली ने हलुआ खाया– 1992,
4. अनुपम –2002 गजल संग्रह
5. उधार की हँसी (2014)
अंगिका :– 6. अंगरथ, माननीय तत्कालीन रेलमंत्री
श्री नीतीश कुमार जी द्वारा विमोचित एवं ति0माँ0
भागलपुर वि0वि0 के स्नातक पाठ्यक्रम में सामिल)–2004
7. हमरौं गीत –2005
8. छप्पर फाँड़ी कॅं (नाटक–2015)
9. भुषणा सिनूर (नाटक–2015)
10. अंगजल (गजल संग्रह– 2016)
11. खरसूप (अंगिका कहानी संग्रह– 2017)
12. धरती के फूल (बाल–कविता संग्रह) हाथ में
13. हुलास (गीत–काव्य प्रेस में
अतिथि संपादक :– जिज्ञासा संसार (अंगिका विशेषांक)
सह संपादन :– कान्ति–पुत्र, मंजिल, प्रगति (पत्रिका), स्मारिका।
संवाददाता :– नई आजादी उद्घोष, इलाहाबाद, स्वतंत्र पत्रकारिता।

सम्मान :– डॉ अम्बेडकर फेलोशिप सम्मान–2003,
दिनकर स्मृति सम्मान,
गोपाल सिंह नेपाली स्मृति सम्मान
जानकी वंल्लभ शास्त्री समृति सम्मान,
डॉ अम्बष्ठ स्मृति सम्मान,
कई रजत सम्मान, अंगविभूति, अंगरत्न, सहित
सौ से अधिक साहित्यिक सांस्कृतिक सम्मान।

प्रसारण :– आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से लगातार रचनाएं प्रसारित एवं कार्यक्रम का संचालन।

राष्ट्रीय मंच :– 1.भारतीय कविता समारोह, तारामंडल पटना,– 2014
(कला संस्कृति एवं युवा विभाग (बिहार सरकार))

2.साहित्य अकादमी, दिल्ली,– 2017
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान, नई दिल्ली– द्वारा दरभंगा में आयोजित आयोजन में अंगिका का प्रतिनिधित्व)

3.मैथिली–भोजपुरी अकादमी, दिल्ली–जनवरी (2018)
(कला संस्कृति एवं भाषा विभाग–दिल्ली सरकार)
के राष्ट्रीय आयोजन में अंगिका का प्रतिनिधित्व।

4.मैथिली भोजपुरी अकादमी, दिल्ली–अगस्त (2019)
(कला संस्कृति एव्र भाषा विभाग–दिल्ली सरकार)
के राष्ट्रीय आयोजन में अंगिका का प्रतिनिधित्व।
इसके अलावे सैकड़ों साहित्यिक मंचों का संचालन।

संपर्क पता :– अंगलोक, पार्वती मिल, आई0सी0एस0 कम्प्यूटर,
सुलतानगंज, भागलपुर (बिहार) – 813213
9334922674 skp11061@rediffmail.com